

दो किनारे

(५१)

एक अपरम्पार की हैं
ये उमड़ती लक्ष लहरें,
रूपिणी असमान सिहरें
जो उसी के गान गहरे
प्रेमदा सी ला रही हैं
सुन रहा जीवन जिन्हें है
बैठ जीवन के किनारे !
दूर हम तुम दो किनारे ।

राम अधार सिंह